एक उत्साही शिक्षका की डायरी

अरविन्द गुप्ता

1946 में पहली बार छपी पुस्तक *मॉय कंट्री स्कूल डायरी* आज भी एक शैक्षणिक क्लासिक है। एक संस्करण छपने के बाद यह पुस्तक बहुत सालों तक दुबारा नहीं छपी। अमरीकी शिक्षाविद् जॉन होल्ट के प्रयासों से ही वो पुन:जीवित हुई।

1940 के दौरान अमरीकी स्कूलों की हालत लगभग हमारे वर्तमान स्कूलों जैसी ही थी। दूर-दराज स्थित ग्रामीण स्कूलों में साधनों का अभाव था। अधिकांश स्कूल 'सिंगल टीचर' स्कूल होते थे। यह कहानी एक उत्साहित और प्रेरक शिक्षका जूलिया वेबर गार्डन के बारे में है। उन्हें एक गरीब ग्रामीण स्कूल में 'पनिशमेंट पोस्टिंग' पर भेजा गया। पर जूलिया उससे बिल्कुल निराश नहीं हुयीं। उन्होंने तुरंत स्थिति का जायजा लिया और अपनी निष्ठा और होशियारी से कुछ ही समय में स्कूल का कायाकल्प कर दिया। उन्होंने अनेक समृद्ध अनुभवों से छात्रों का हौंसला बढ़ाया और अलग-अलग कामों में उनकी रुचि बढ़ाई। उन्होंने अपने प्रयासों से स्कूल को ग्रामीण परिवेश और उसके समुदाय से जोड़ा। धीरे-धीरे बच्चों को लगने लगा कि स्कूल एक अर्थहीन पाठ्सक्रम सीखने की जगह नहीं, बल्कि असली दुनिया को समझने की जगह है।

इस पुस्तक की तुलना अपने देश के महान शिक्षाविद् गिजुभाई बधेका की पुस्तक 'दिवास्वप्न' से की जा सकती है। नैशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'दिवास्वप्न' का मूल संदेश है कि एक प्रेरित शिक्षक तमाम विषम परिस्थितियों, कठिनाईयों, अड़चनों और अभावों के बावजूद भी अगर चाहे तो बहुत कुछ सार्थक कर सकता है।

मंहगी इमारतों, मंहगी प्रयोगशालाओं, कम्पयूटरों और ऍअर-कंडीशंड बसों से अच्छे स्कूल नहीं बनते। अच्छे स्कूल के लिए सबसे अच्छा निवेष शिक्षक ही हो सकता है। *मॉय कंट्री स्कूल डायरी* इस विश्वास की बखूबी पुष्टि करती है। 1940 में मिस वेबर को अमरीका एक दूर-दराज इलाके में भेजा गया। स्कूल में 30 बच्चे थे और मिस वेबर उनकी एक मात्र टीचर थीं। उन्हें पहली से आठवीं कक्षा तक के सभी विषय पढ़ाने थे। मौका और आजादी मिलने से एक प्रेरित शिक्षक क्या कर सकता है यह पुस्तक यही बयां करती है। यह स्कूल एक गरीब ग्रामीण इलाके में था। पैसों और साधनों के अभाव में मिस वेबर ने उन्हीं शैक्षिणिक साधनों पर अधिक ध्यान दिया जो वो खुद, अपने छात्रों और स्थानीय लोगों की मदद से कम-लागत में बना सकती थीं।

मिस वेबर की कक्षा में कई विकलांग और मानसिक रूप से अस्वस्थ्य बच्चे भी थे। परंतु मिस वेबर ने इसके बारे में कभी शिकयत नहीं की। उनकी कक्षा में अलग-अलग उम्र और क्षमताओं के बच्चे थे। परंतु उन्होंने इसकी परवाह किए बिना वो किया जो वो खुद कर सकती थीं - उन्होंने पढ़ाई को रोचक बनाया। मिस वेबर के लिए हरेक बच्चा मायने रखता था, महत्वपूर्ण था। उनकी कक्षा में हरेक बच्चा सीखता था और आगे बढ़ता था।

एक महीने के अंदर ही मिस वेबर ने उस गरीब, साधन-विहीन स्कूल का हुलिया बदल डाला। स्कूल अब पहले से कहीं अधिक सुंदर और साफ-सुथरा था। अब वहां बच्चों के सीखने, खेलने, पढ़ने और सोचने के तमाम आयाम खुल गये थे। आज साधनों का काफी बोलबाला है - मोबाईल पुस्तकालय, चलती-फिरती प्रयोगशालाएं, इंटरनेट आदि जिसका उपयोग कोई भी उत्साही शिक्षक कर सकता है। परंतु इन सब संसाधनों के बिना भी मिस वेबर बच्चों के लिए एक बहुत समृद्ध और रोचक सीखने का माहौल रच पायीं।

जब कभी छात्रों को किसी उपकरण, किसी पुस्तक आदि की जरूरत पड़ती तो मिस वेबर तुरंत उसकी तलाश करतीं। वो वस्तु जहां कहीं, जिसके पास होती वो उससे उधार मांग लातीं। उन्होंने अन्य स्कूलों, राज्य के कृषि विभाग, स्थानीय कालेज और अन्य सहकारी संस्थाओं के साधनों का समुचित उपयोग किया। एक स्थानीय बढ़ई ने बड़े बच्चों को खिलौने और लकड़ी का खेल-घर बनाना सिखाया। यह छोटे बच्चों के लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ। स्कूल में अच्छी किताबों का अभाव था। एक साल में मिस वेबर के छात्रों ने स्थानीय लाइब्रेरी से 700 पुस्तकें उधार लीं - यानि हर बच्चे ने 20 से अधिक पुस्तकें पढ़ीं। अधिकांश स्कूलों में पुस्तकें लाइब्रेरी की अल्मारियों में कैद सिसकती रहती हैं!

इस पुस्तक में एक और महत्वपूर्ण सीख है। स्कूल स्थानीय समुदाय से कटा न हो। बच्चों को लगे कि वो एक ऐसे जीवांत समुदाय का अंग हैं जिसे वो देख सकते हैं, महसूस कर सकते हैं और समझ कर बदल सकते हैं। बच्चे तभी सबसे अच्छा सीखते हैं जब उनके समुदाय के लोग स्कूल में आते हैं। जब पढ़ाई बच्चों के स्कूल के बाहर की जरूरतों, सपनों, आकांक्षाओं और समस्याओं को छूती है। यह सब कुछ मिस वेबर ने कहां से सीखा?

वो छात्रों से गांव में जाकर वहां के जीवन और इतिहास पर जानकारी इकट्ठी करने को करतीं। लोग अपनी आजीविका के लिए क्या करते हैं? वो गांववासियों को स्कूल में लातीं और उनका स्वागत करतीं। धीरे-धीरे स्कूल गांववालों के जीवन का एक अंग बन गया। मिस वेबर ने स्कूल को समुदान का एक अभिन्न हिस्सा बनाया।

वैसे मिस वेबर तमाम चीजों में कुशल थीं। वो इनकी विशेषज्ञ भले ही न हों पर वो इन तमाम कलाओं में बच्चों की रुचि जगाने में दक्ष थीं। वो कितनी चीजें जानती थीं उसकी फेहरिस्त अपने आप में बहुत कुछ बयां करती है। वो पियानो और माउथ-ऑर्गन बजातीं, लोक-नृत्य, गीत-संगीत, खेल-घर बनाना, कठपुतलियां बनाना और चलाना, भिन्न प्रकार के खेल, कागज की घूमने वाली चरखियां, कला, पेड़-पौधों के नाम, फूलों की क्यारियां बनाना, भिन्न पत्थरों की पहचान और उनके नाम, आदिवासी कहानियां, सिलाई, भोजन बनाना, नमक के क्रिस्टल बनाना, चिथड़ों से गमले लटकाने के हैंगर बनाना, खेल-घर के लिए फर्नीचर बनाना, जानवरों के पैरों के निशानों के सांचे बनाना और उनमें से कई को पहचानना, सूत कातना और खड्डी पर बुनाई करना जैसे बहुत से हुनर उन्हें आते थे। उन्होंने क्रियाओं और गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को यह सब करने को प्रेरित किया।

बहुत से सुझाव मिस वेबर को बच्चों से ही मिलते। वो उन बातों को बस आगे बढ़ातीं। इस प्रकार वो एक बोझिल पाठ्यक्रम को अपनाने से मुक्त थीं। स्कूल में हर रोज कुछ नया होता जिसमें बच्चों को बहुत आनंद आता।

इस सुंदर पुस्तक का हिंदी में अनुवाद पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा ने किया है और भोपाल स्थित संस्था एकलव्य इसे जल्द ही छापेगी। अंग्रेजी में इस पुस्तक को मेरी वेबसाईट से डाउनलोड किया जा सकता है: http://arvindguptatoys.com